इस्लामी मालूमात

भाग-2

मैलाना हाफ़िज़ बदरूद्दीन (एम० ए०)

इस्लामी मालूमात

भाग-2

मैलाना हाफ़िज़ बदरूद्दीन (एम० ए०)

www.idaraimpex.com

इस्लामी मालूमात (भाग-2)

लेखकः मौलाना हाफ़िज़ बदरूद्दीन (एम. ए.)

अनुवादकः अहमद नदीम नदवी

प्रकाशन : 2013

ISBN 81-7101-551-4

TP-177-13

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: **sales@idaraimpex.com**
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

विषय पृष्ठ

पढ़ने वालों की ख़िदमत में

हमारे बच्चो! आपने इस्लामी मालूमात का पहला हिस्सा ख़त्म कर लिया, मुबारक हो। उम्मीद है कि इस किताब में आपने वुज़ू का तरीक़ा, नमाज़ की दुआएं और नमाज़ के ज़रूरी क़ायदे वग़ैरह अच्छी तरह याद कर लिए होंगे।

अब दूसरा हिस्सा आपके सामने है। इस के एक-एक सबक़ को ग़ौर से पढ़िए, जिस लफ़्ज़ के मानी मालूम न हों या जो बात समझ में न आए, वह अपने उस्ताद से मालूम कीजिए। जिन सबक़ों में लिखने के काम की हिदायत की गई है, उसे भी ध्यान दे कर कीजिए।

अल्लाह ने चाहा तो इस किताब को मुकम्मल करने के बाद बहुत-सी इस्लामी बातें आपके ज़ेहन में बैठ जाएंगी। अल्लाह आपको और हम सबको सच्चा और पक्का मुसलमान बनाए। आमीन!

उस्तादों से

अल्लाह का शुक्र है इस्लामी मालूमात का दूसरा हिस्सा ख़िदमत में पेश है। इस किताब की वे ख़ास बातें, जो बच्चों की दूसरी आम फ़िक़्ह और अक़ीदों की किताबों में अपनी ख़ास हैसियत रखती हैं, नीचे लिखी जा रही हैं–

1. दिलचस्प और आसान उन्वान,

2. क़ियामत, तक़्दीर, मरने के बाद ज़िंदा होना और इस जैसे मुश्किल मज़्मूनों, बच्चों की अपनी ज़िंदगी की मिसालों के ज़रिए बड़े ही आसान अन्दाज़ में समझाने की कोशिश की गई है,

3. ज़्यादातर सबक़ों के आख़िर में सवाल क़ायम किए गए हैं, ताकि उनके ज़रिए बच्चों के मन में सबक़ की बातें बिठाने में मदद मिल सके। ख़ाली जगहों को भरने (fill up the blank), नक़्शा बनाकर याद करने और मज़्मून (essays) लिखवाने के तरीक़े अपनाए गए हैं।

4. अक़ीदों और मस्‌अलों के अलावा आख़िर में आम इस्लामी इस्तिलाहों के कुछ सबक़ शामिल किए गए हैं, ताकि बच्चों को इस्तिलाहों की जानकारी होती रहे, जो आमतौर पर 'इस्लामियात' की किताबों में आती हैं।

आख़िर में, मैं उन तमाम उस्तादों और दोस्तों का शुक्रिया अदा करता हूं जिन्होंने पहले हिस्से को शौक़ से पढ़ा और अपने फ़ायदेमंद मश्विरे दिए, दूसरे हिस्से के पूरा होने में मेरी मदद फ़रमाई और अपने क़ीमती ख़्यालों से मेरी हिम्मत बढ़ाई।

अल्लाह तआला हमारी इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। आमीन

—ख़ादिम बदरुद्दीन

तराना

हम हैं सच्चे मुस्लिम बच्चे, मज़हब है इस्लाम हमारा,
सच्चाई से काम हमारा, इल्म व अमल पैग़ाम हमारा।
अपने बड़ों के हुक्म को मानें, अच्छे-बुरे को हम पहचानें,
नेक इरादों के साए में, होता है हर काम हमारा।
इल्म से बेशक प्यार है हमको, बेकारी से आर है हमको,
काम वही करते हैं जिससे, नाम न हो बदनाम हमारा।
दिल में हमारे ऐसी लगन है, कोसों हमसे दूर थकन है,
हम मेहनत के मतवाले हैं, काम में है आराम हमारा।
बुग्ज़ व हसद से हमको नफ़रत, दिल में रोशन शमा-ए-मुहब्बत,
ख़िदमते इंसां रूह हमारी, मेहनत है इनआम हमारा।
एक ख़ुदा के हम मतवाले, बातिल को धमकाने वाले,
दीन व वतन की ख़िदमत करना काम है सुबह व शाम हमार।
सारी दुनिया देख रही है, अपनी तो बस राह यही है,
क़ुर्बे नबी आग़ाज़ हमारा, क़ुर्बे ख़ुदा अंजाम हमारा।

दुनिया ख़ूब बनाई किसने?

घर की हर उस चीज़ को देखो जो हमारे काम में आती है, फिर उस पर ग़ौर करो कि यह केसे तैयार हुईं?

हमारे रहने का मकान राज मज़दूर ने बनाया, चारपाई, मेज़-कुर्सी, अलमारी बढ़ई ने बनाई, कपड़े दर्ज़ी ने सिले, हमारा खाना रोज़ाना कोई न कोई पकाता है, तब ही पेट भरता है, जब तक कोई आटा गूंध कर रोटी न पकाए, ख़ुद नहीं पकती, हर चीज़ का कोई न कोई बनाने वाला है और बहुत से लोगों के हाथों से बनी हुई चीज़ों से घर का सब सामान तैयार हुआ है। अच्छा, अब ज़रा घर से बाहर निकलो और लम्बी-चौड़ी फैली हुई ज़मीन की अनगिनत पैदा की हुई चीज़ों को देखो, सिर्फ़ जानवरों ही पर नज़र डालो, उनकी ज़िंदगी कैसे लगे-बंधे क़ायदों और उसूलों के मुताबिक़ चल रही है, गाय-भैंस-बकरी चाहे हरी घास खाएं या सूखी रोटी खिला दो या सानी, मगर दूध सफ़ेद ही देंगी। मुर्ग़ी का बच्चा अंडे से निकलते ही दाने की तलाश शुरू कर देता है।

भला बताओ, वह कौन है जिसने दूध वाले जानवरों के थनों से सफ़ेद दूध निकाला, चारों तरफ़ से बन्द अंडे में एक जानदार बच्चा बनाया, फिर उस बच्चे को इतनी समझ दी कि अंडे से निकलते ही वह अपना खाना खोजना शुरू कर दे और यह देखो कि ज्यों-ज्यों दिन गुज़रते जाते हैं, बच्चा अपने आप बढ़ता जाता है।

आख़िर वह कौन-सी मशीन है जो उसे अन्दर से बढ़ा रही है और हमें नज़र नहीं आती और फिर यह भी सोचने की बात है कि दुनिया की सारी चीज़ें बग़ैर मक़्सद के नहीं, हर चीज़ का कोई काम और मक़्सद है।

अगर सूरज न होता, खेतियां कैसे पकतीं, फल कैसे तैयार होते, बारिश के बाद ज़मीन कैसे सूखती? अगर चांद न होता तो दिन भर के थके-हारे इंसानों और हैवानों को आराम का वक़्त कैसे मिलता? दिन न होता तो लोग उजाले को तरस जाते, समुन्दर और दरिया न होते तो पानी के बग़ैर इंसान, हैवान और पेड़-पौधों की ज़िंदगी मुश्किल हो जाती, सिर्फ़ पानी होता, ख़ुश्की न होती, तो आप हरी-भरी खेतियां, बाग़ और फूल-फल कहां से लाते, हवा न होती तो सब इंसान और हैवान कैसे सांस लेते, ग़रज़ जिस चीज़ को देखिए, हर एक के पीछे कोई ख़ास मक़्सद नज़र आता है, कोई चीज़ बेकार नहीं, मगर फिर वही सवाल सामने है कि यह सब फ़ायदेमंद चीज़ें किसने बनाई है?

इस सवाल को सोचने के लिए जब दुनिया पैदा हुई, उस वक़्त से लेकर अब तक हज़ारों पढ़े-लिखे लोगों ने ग़ौर किया कि यह दुनिया किसने बनाई या ख़ुद बन गई और पूरी-पूरी उम्रें इसके सोचने में लगा दीं, मगर आख़िरकार इस नतीजे पर पहुंचे कि दुनिया की उन तमाम चीज़ों को पैदा करने वाली वह सबसे बड़ी ताक़त है, जिसे 'अल्लाह' कहते हैं।

सवालात

1.जानवरों की ज़िंदगी से हमें क्या सबक़ मिलता है?

2. अंडे में जानदार बच्चा किस ने बनाया?

3. गाय-भैंस के थनों में किस ने दूध पैदा किया?

4. हवा, पानी, चांद, सूरज, दिन, रात से क्या फ़ायदे हैं?

अमली काम

उस्ताद को चाहिए कि ऊपर के सवालों और नीचे लिखे इशारों की ओर ज़्यादा तफ़्सील बच्चों को समझाएं और मज़्मून लिखवाएं–

ज़मीन के फ़ायदे, पेड़-पौधों के फ़ायदे, आग के फ़ायदे, हमारे जिस्म में मौजूद आंख, नाक, मुंह, हाथ, पैर और दूसरे अंगों के फ़ायदे,

इन सब फ़ायदों और सब चीज़ों का पैदा करने वाला कौन है?

सीधा रास्ता

उसी अल्लाह पाक ने, जिसने इस दुनिया को बनाया, दुनिया की हर चीज़ बनाई और उसमें अच्छे ख़ूबसूरत इंसान पैदा किए, उसी ने इन इंसानों को अच्छी तरह ज़िंदगी गुज़ारने के लिए कुछ उसूल और तरीक़े बताए, अपने पैदा करने वाले की इबादत और बन्दगी करने का ढंग सिखाया और इन उसूलों, तरीक़ों को बताने, समझाने के लिए अपने कुछ ख़ास बन्दों को मुक़र्रर फ़रमाया, जिन्हें हम ख़ुदा के पैग़म्बर, रसूल और नबी के नामों से याद करते हैं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक जितने पैग़म्बर आए, उन सब की तालीम एक ही क़िस्म की थी, सब ने एक ही रास्ता दिखाया।

सब ने कहा, दुनिया में सुख-चैन की ज़िंदगी गुज़ारना चाहो और यह चाहो कि अल्लाह भी तुमसे ख़ुश रहे, तो उसकी बताई हुई बातों पर यक़ीन रखो, उसके हुक्मों पर अमल करो और उसके सच्चे फ़रमांबरदार बन जाओ। उसी फ़रमांबरदारी और इताअत का नाम इस्लाम है और यही ज़िंदगी गुज़ारने का सीधा रास्ता है।

बुनियाद पक्की, मकान पक्का

आप ने देखा होगा, हर मकान को बनाने से पहले उसकी दीवारों और स्तूनों का कुछ हिस्सा ज़मीन के अन्दर बनाया जाता है। इस अन्दर के हिस्से को बुनियाद कहते हैं।

बुनियाद जितनी गहरी और मज़बूत होती है, उतना ही मकान मज़बूत होता है और ज़्यादा अर्से तक क़ायम रहता है।

मकान की तरह इस्लाम मज़हब की भी बुनियादें हैं। ये बुनियादें पांच हैं और जैसे मकान की बुनियाद की मज़बूती और गहराई पर मकान मज़बूत होता है, बिल्कुल उसी तरह इस्लाम की बुनियादों में कोई ईंट-गारा तो है नहीं, फिर उसे कैसे मज़बूत बनाया जाएगा?

इसका तरीक़ा यह है कि इस्लाम की जिन बातों को बुनियाद बताया गया है, उनको हर मुसलमान दिल और ज़ुबान से मान ले, उन पर यक़ीन कर ले और हमेशा अमल करे, बस यही इस्लाम की बुनियादों को मज़बूत करना है। जिसने इन बुनियादी बातों को मान लिया और उन पर अमल किया, वही पक्का मुसलमान हो गया।

लो सुनो! इस्लाम की बुनियादी बातें क्या हैं?

1. पहली बात तो वही है जिसको आप 'इस्लामी मालूमात' के पहले हिस्से में पढ़ आए हैं, यानी अल्लाह तआला को दिल से एक मानना, ज़ुबान से उसका इक़रार करना और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का सच्चा नबी मानना।

2. नमाज़ पढ़ना।

3. अपने माल में से मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा ग़रीबों को देना, जिसे ज़कात कहते हैं।

4. रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखना।

5. ज़िंदगी में एक बार मक्का शरीफ़ जाकर बक़रीद के महीने में ख़ास इबादत करना, जिसे हज कहते हैं।

ये इस्लाम की पांच बुनियादी बातें हैं, जिन पर हर मुसलमान को यक़ीन रखना ज़रूरी है।

अगर कोई आदमी दिल से इन बातों पर यक़ीन रखे, मगर अमल न करे, वह मुसलमान है, हां, अमल न करने की वजह से गुनाहगार है।

अगर कोई आदमी सिर्फ़ ज़ुबान से इन बातों को कह ले, मगर दिल से यक़ीन न करे, वह मुसलमान नहीं।

अगर कोई गूंगा ज़ुबान से न कह सके, तो उसका इशारा कर देना काफ़ी है।

सवालात

1. इस्लाम की बुनियादी बातें क्या हैं?

2. इस्लाम की बुनियादों को किस तरह मज़बूत किया जा सकता है?

3. गूंगे आदमी का मुसलमान होना किस तरह मालूम किया जा सकता है?

यक़ीन और अमल करने की बातों में फ़र्क़

अल्लाह पाक ने मुसलमानों को जो हुक्म दिए हैं, वे दो क़िस्म के हैं:–

कुछ तो ऐसे हुक्म हैं जिन पर दिल से यक़ीन कर लेना काफ़ी है। इनमें हाथ-पांव या जिस्म को कोई काम नहीं करना पढ़ता। ऐसे हुक्मों को इस्लामी अक़ीदे कहते हैं, जैसे अल्लाह को दिल से मानना, नबियों को मानना, फ़रिश्तों और किताबों पर यक़ीन रखना।

दूसरे क़िस्म के हुक्म वे हैं जिन पर दिल से यक़ीन करना और उन पर अमल करना भी ज़रूरी है। ऐसे हुक्मों को इस्लामी आमाल कहते हैं, जैसे नमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना।

इस्लामी अक़ीदे को यहां एक इबारत में जमा किया गया है, जिसे 'ईमाने मुफ़स्सल' कहते हैं–

ईमाने मुफ़स्सल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

'आमन्तु बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल यौमिल आख़िरि वल क़द्रि ख़ैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि तआला वल बासि बादल मौत'

(मैं ईमान लाया अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर और इस पर कि अच्छी-बुरी तक़्दीर ख़ुदा की तरफ़ से होती है और मौत के बाद उठाए जाने पर।)

ईमाने मुफ़स्सल पर यक़ीन क्यों ज़रूरी है?

यह तो आप जानते ही है कि मुसलमान उन्हीं हुक्मों पर अमल करते हैं जो अल्लाह तआला ने दुनिया में भेजे, लेकिन सवाल यह है कि अल्लाह तआला के हुक्म इंसानों के पास केसे पहुंचे।

इसकी सूरत यह हुई कि हज़ारों साल पहले अल्लाह तआला ने दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में थोड़े-थोड़े दिनों के बाद कुछ ऐसे लोगों को पैदा किया था जो अल्लाह के हुक्म लोगों को सुनाएं और ख़ुद करके दिखाएं।

इन्हीं लोगों को अल्लाह के पैग़म्बर कहा जाता है। जब कभी-भी ये पैग़म्बर दुनिया में आए तो अल्लाह तआला ने उनके पास अपने फ़रिश्तों के ज़रिए अपने हुक्म और किताबें भेजीं, ताकि पैग़म्बर इन किताबों को पढ़कर, लोगों को समझाएं, बताएं। इस तरह जब ये किताबें और ख़ुदा के हुक्म दुनिया में आ गए तो एक दूसरे के ज़रिए सारी दुनिया में फैल गए।

अब आपकी समझ में आ गया होगा कि अल्लाह के हुक्म हम तक केसे पहुंचे और साथ ही यह बात भी मालूम हो गई होगी कि अल्लाह का हुक्म हम तक पहुंचने के लिए रास्ते में जो लोग ज़रिया और वास्ता बनें, उन पर एतबार करना भी हमें ज़रूरी हो गया।

इसलिए कि अगर हम इस हुक्म पर, हुक्म भेजने वाले पर, हुक्म

लाने वाले पर, और जिसके पास हुक्म भेजा गया है, उस पर एतबार न करें तो इस हुक्म की क्या अहमियत और क्या वज़न बाक़ी रहेगा।

और जब उसकी क़द्र न होगी तो अमल कैसे करेगा, इसलिए यह ज़रूरी हो गया कि हम इन सब पर यक़ीन रखें, सबको सच्चा समझें, जब ही मुसलमान हो सकते हैं। अब आप समझ गए होंगे कि ईमाने मुफ़स्सल में जिन चीज़ों का ज़िक्र किसा गया, उन पर यक़ीन करना क्यों ज़रूरी है?

हां, आख़िर की दो बातें-- 'तक़्दीर और मरने के बाद ज़िंदा होना' रह गईं, इसको आगे चलकर समझाएंगे।

अल्लाह के फ़रिश्ते

आप लोग दिन-रात देखते हैं, हर शहर, क़स्बे और गांव में देखते हैं हुकूमत इंतिज़ाम करने के लिए कुछ लोगों को मुक़र्रर करती है, ये लोग अपनी-अपनी ड्यूटियां अंजाम देते हैं।

बहुत से आदमी शहर में रोशनी करने पर मुक़र्रर हैं, बहुत से लोग सफ़ाई का काम करते हैं, बहुत से शफ़ा ख़ानों में आम लोगों का इलाज करते हैं, बिल्कुल इसी तरह अल्लाह ने ज़मीन और आसमान की हुकूमत का इंतिज़ाम करने के लिए और फ़रमांबरदारी और इबादत करने के लिए अपनी क़ुदरत से एक नूरानी मख़्लूक़ पैदा की है जो हमारी नज़रों से ग़ायब है, इन्हें फ़रिश्ते कहते हैं। फ़रिश्तों की सही तायदाद किसी को मालूम नहीं, ये लाखों-करोड़ों की तायदाद में हैं और अल्लाह तआला के हुक्मों के मुताबिक़ अपने काम अंजाम देते हैं, इसी तरह उनकी शक्ल व सूरत भी किसी को मालूम नहीं।

फ़रिश्ते न तो इंसानों जैसा जिस्म रखते हैं न खाते हैं, न सोते हैं, न इंसानों की तरह मर्द-औरत होते हैं, बस यों कहिए कि वे तमाम जानदारों से अलग अल्लाह की एक अलग मख़्लूक़ हैं।

अल्लाह ने उनको बड़ी ताक़त दी है और वे बड़े से बड़ा काम अंजाम दे सकते हैं।

फ़रिश्तों की डयुटियां

बहुत से फ़रिश्ते, दिन-रात सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादत करते रहते हैं।

बहुत से फ़रिश्ते इंसानों के अच्छे-बुरे तमाम काम लिखने पर मुक़र्रर होते हैं, हर इंसान के साथ दो फ़रिश्ते रहते हैं, एक अच्छे काम लिखता है, दूसरा बुरे काम लिखता है। इन फ़रिश्तों को 'किरामन कातिबीन' कहते हैं।

कुछ फ़रिश्ते जन्नत के इंतिज़ाम और उसके काम पर मुक़र्रर हैं, बहुत से दोजख़ के इंतिज़ाम पर मुक़र्रर हैं।

इनके अलावा कुछ फ़रिश्ते दुनिया के काम करते हैं, जैसे पानी बरसाना, खाने-पीने का इंतिज़ाम करना, मारना, पैदा करना।

इन सब में चार बड़े और अल्लाह के ख़ास फ़रिश्ते हैं, जिनके नाम और काम ये हैं—

1. हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम :— यह अल्लाह की किताबें और अहकाम नबियों के पास लाते थे।

2. हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम :— इनके सुपुर्द पानी और खाने-पीने का इंतिज़ाम करना है।

3. हज़रत अज़्राईल अलैहिस्सलाम :– यह मख़्लूक़ की जान निकालने के काम पर मुक़र्रर हैं।

4. हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम :– यह क़ियामत के दिन सूर फूकेंगे। यह एक ज़ोरदार सीटी की आवाज़ होगी, जिससे सब जानदार मर जाएंगे।

इसी तरह करोड़ों फ़रिश्ते अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ अपनी-अपनी डयुटियां अंजाम देते हैं, बड़े फ़रिश्तों के मातहत और बहुत से फ़रिश्ते काम करते हैं और उनकी डयुटियां भी बदलती रहती हैं।

दुनिया में जो फ़रिश्ते रात में काम करते हैं, वे सुबह फ़ज्र के वक़्त चले जाते हैं और उनकी जगह दिन में काम करने वाले आ जाते हैं, फिर शाम को अस्र के वक़्त दिन में काम करने वाले फ़रिश्ते चले जाते हैं और रात वाले आ जाते हैं।

सवालात

1. फ़रिश्ते किस लिए पैदा किए गए हैं?
2. फ़रिश्ते किस चीज़ से पैदा किए गए हैं?
3. फ़रिश्ते क्या-क्या काम करते हैं?
4. मशहूर फ़रिश्तों के नाम और काम बताइए?

मश्क़ (अभ्यास)

अपनी कापी में नीचे लिखे हुए जुम्ले लिखकर ख़ाली जगहों को भरिए?

1. हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम............पैग़म्बरों के पास लाते थे।

2. पानी बरसाने का काम......................के सुपुर्द है।

3. क़ियामत में सूर फूंकने वाले फ़रिश्ते का नाम..............है।

4. हज़रत.................मख़्लूक़ की जान निकालने पर मुक़र्रर हैं।

5. हर इंसान के साथ दो फ़रिश्ते रहते हैं, उनके नाम..........हैं।

अल्लाह की किताबें

यह आप पहले पढ़ चुके हैं कि अल्लाह मियां ने अपने हुक्मों की बहुत-सी किताबें अपने पैग़म्बरों के पास भेजी थीं, उन किताबों की सही तायदाद तो मालूम नहीं, मगर जिन किताबों के नामों का ज़िक्र क़ुरआन शरीफ़ में आया है, वे हम आपको बताएंगे।

यहां यह समझ लीजिए कि जो बड़ी-बड़ी आसमानी किताबें पैग़म्बरों के पास आई थीं, उन्हें 'किताब' कहते हैं और छोटी-छोटी आसमानी किताबों को 'सहीफ़ा' कहते हैं।

बड़ी मशहूर आसमानी किताबें ये हैं–

1. **तौरात** :– हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आई।

2. **ज़बूर** :– हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के पास आई।

3. **इंजील** :– हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास आई।

4. **क़ुरआन शरीफ़** :– हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया।

सहीफ़े :– बहुत से नबियों के पास आए, मगर ख़ासतौर पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सहीफ़ों का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में आया है।

सवालात

1. किताब और सहीफ़ा में क्या फ़र्क़ है?

2. मशहूर आसमानी किताबों के नाम बताइए।

3. मशहूर किताबें किन पैग़म्बरों के पास भेजी गईं?

4. किन पैग़म्बरों के सहीफ़ों का ज़िक्र क़ुरआन शरीफ़ में आया है?

मश्क़

अपनी कापी में एक नक्शा बनाइए और किताबों के नाम जुबानी याद कीजिए।

नम्बर शुमार	किताब का नाम	पैग़म्बरों का नाम

ख़ुदा के रसूल

अल्लाह तआला इंसानों को भलाई के काम सिखाने और बुराई से रोकने के लिए कभी-कभी कुछ ख़ास आदमियों को मुक़र्रर करते हैं, उनको अल्लाह के रसूल कहते हैं।

उनका काम यह होता है कि अल्लाह तआला के पास से जो हुक्म उनके पास आएं, वे बग़ैर कुछ कमी-ज़्यादती किए ज्यां के त्यों आम लोगों को सुना दें और ख़ुद उन पर अमल करके दिखाएं। ये

लोग बड़े ईमानदार, सच्चे और हर क़िस्म की इंसानी ख़ूबियों के मालिक होते हैं।

नबी और रसूल में फ़र्क़

दोनों का काम एक ही होता है यानी लोगों को अल्लाह की बातें बताना और सिखाना, सिर्फ़ फ़र्क़ यह होता है कि रसूल के पास अल्लाह तआला नई किताब भेजते हैं और नबी के पास नई किताब या नए क़ानून नहीं आते, बल्कि वे पिछली आई हुई किताबों के हुक्मों पर लोगों से अमल कराते हैं।

जैसे किसी क्लास में एक उस्ताद पूरे साल में एक किताब पढ़ाए और ख़त्म कराके चला जाए। आख़िर साल में एक दो महीने के लिए एक दूसरा उस्ताद दर्जे में आए और उस पिछली पढ़ी हुई किताब को दोहराए।

ये दोनों उस्ताद मर्तबे और ओहदे में बराबर हैं, सिर्फ़ काम मे थोड़ा सा फ़र्क़ है। बस इसी क़िस्म का फ़र्क़ रसूल और नबी में होता है।

नबियों और रसूलों की तायदाद

इनकी सही तायदाद तो मालूम नहीं, हज़ारों की तायदाद में दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में आते रहे। जब भी दुनिया के किसी हिस्से में लोगों में बुराइयां फैलीं, और अच्छाइयां कम हुईं तो अल्लाह मियां ने उनको सच्ची बातें बताने और सीधा रास्ता दिखाने के लिए अपने किसी रसूल या नबी को भेजा।

दुनिया में सबसे पहले पैग़म्बर हज़रत आदम अलैहि० आए। उनके बाद हज़ारों साल तक पैग़म्बर आते रहे और लोगों को अल्लाह

तआला की बातें बताते रहे।

इनमें से थोड़े-से पैग़म्बरों के नाम हम यहां लिखते हैं जिनका ज़िक्र कुरआन मजीद में आया है—

- हज़रत आदम अलैहिस्सलाम,
- हज़रत नूह अलैहिस्सलाम,
- हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम,
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम,
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम,
- हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम,
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम,
- हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम,

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल पर पैग़म्बरों का यह सिलसिला ख़त्म हो गया और अब दुनिया के ख़त्म होने तक कोई नया पैग़म्बर नहीं आएगा, ख़ुद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं सब नबियों में आख़िर में आने वाला हूं, मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा।

सवालात

1. अल्लाह के रसूल दुनिया में किस लिए आए?
2. नबी और रसूल में क्या फ़र्क़ है?
3. कुरआन मजीद में जिन नबियों का ज़िक्र है, उनमें से पांच नबियों के नाम बताइए?

नतीजे का दिन

जो बच्चे स्कूलों में पढ़ते हैं, वे देखते हैं कि साल भर पढ़ाई होती है, फिर इम्तिहान होता है और उसके बाद एक दिन ऐसा आता है जिसे नतीजे का दिन कहते हैं। उस दिन क्या होता है, आप जानते ही हैं। जिस लड़के ने साल भर ख़ूब मेहनत की है, क्लास में पाबन्दी से आया है, उस्ताद का कहना माना है, उसका नतीजा बहुत अच्छा आता है, सब लोग उससे ख़ुश होते हैं और इनाम देते हैं। जिस लड़के ने साल भर मेहनत नहीं की, उस्ताद का कहना नहीं माना, उसका नतीजा ख़राब आता है, सब लोग उससे नाराज़ होते हैं और सज़ा देते हैं।

इसी तरह यों समझो कि यह दुनिया भी एक बहुत बड़ी क्लास है और दुनिया के करोड़ों इंसान इस क्लास के तालिबे इल्म हैं, सब इसीलिए आए हैं कि इस क्लास में अल्लाह मियां के मंज़ूर किए हुए निसाब की किताबें पढ़ें और अल्लाह के भेजे हुए उस्तादों यानी पैग़म्बरों का कहना मानें, ख़ुद पढ़ें, औरों को पढ़ाएं।

और जब यहां की तालीम का ज़माना ख़त्म हो तो एक दिन ऐसा आए, जिस दिन सबके कामों का नतीजा सुनाया जाए। इसी नतीजे के दिन को क़ियामत का दिन कहते हैं।

उस दिन क्या होगा?

जिसने दुनिया में आकर अच्छे काम किए और अल्लाह का कहना माना, उसे अच्छा बदला और इनाम मिलेगा, जिसने बुरे काम किए और अल्लाह का कहना नहीं माना, उसे बुरा बदला यानी सज़ा

मिलेगी। इस अच्छे बदले का नाम जन्नत और बुरे बदले का नाम दोज़ख़ है।

क़ियामत कब आएगी?

अब आप सोचते होंगे कि यह क़ियामत का दिन कब होगा, उसकी तारीख़ मालूम हो जाए तो अच्छा है।

मगर बात यह है कि जिस तरह अल्लाह तआला ने नबियों की और फ़रिश्तों की तायदाद नहीं बताई, उसी तरह क़ियामत की तारीख़ नहीं बताई और यह कोई नई और अनोखी बात नहीं है। बहुत-सी बातें हुकूमत की ऐसी राज़ की होती हैं जो आम लोगों को नहीं बताई जातीं।

आप ने देखा होगा, कभी-कभी क्लास में मास्टर साहब बच्चों से कहते हैं, देखिए जनाब! आप लोग जल्दी से अपने सबक़ याद कर लीजिए, मैं किसी दिन भी जांच ले लूंगा और इस जांच में जो फ़ेल होगा, वह इम्तिहान में भी फ़ेल हो जाएगा, लेकिन मास्टर साहब जांच का कोई दिन नहीं बताते।

आप जानते हैं, ऐसा क्यों होता है? मास्टर साहब दिन क्यों नहीं बताते?

वह इसलिए नहीं बताते कि अगर सनीचर के दिन यह कह दें कि मैं जुमारात को जांच लूंगा तो लड़के यक़ीनी तौर पर इतवार से लेकर बुध तक कोई ख़ास तवज्जोह से नहीं पढ़ेंगे, यही सोचेंगे कि अभी क्या है, जांच से एक दिन पहले पढ़ लेंगे। नतीजा यह होगा कि तैयारी न होने की वजह से बहुत से लड़के नाकाम हो जाएंगे।

हां, इस अंदाज़ में, जब मास्टर साहब जांच का कोई दिन-तारीख़

न बताएं, बस यह कह दें कि तैयार रहिए, किसी दिन भी जांच ले लूंगा, तो लड़के उसी दिन से तैयारी शुरू कर देंगे और हर वक़्त जांच के लिए तैयार रहेंगे। इसका नतीजा यह होगा कि अपनी कामियाबी की कोशिश में लग जाएंगे और क्लास में शरारत भी नहीं होगी और बहुत कम लड़के फ़ेल होंगे।

अब आप ख़ुद अन्दाज़ा लगाइए कि जांच का वक़्त और दिन बता देने में फ़ायदा है या न बताने में?

यही हाल क़ियामत का है, अगर उसका मुक़र्रर वक़्त बता दिया जाता तो लोग क़ियामत का दिन आने पर ही तैयारी करते, पहले से किसी को फ़िक्र न होती।

एक बार प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आपके किसी दोस्त (सहाबी) ने पूछा,

हुज़ूर! क़ियामत कब आएगी?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके जवाब में फ़रमाया, तुमने इसके लिए क्या तैयारी की है?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह जवाब इसलिए दिया कि तुम इसकी तारीख़ और दिन की खोज में न पड़ो, बल्कि इसके लिए तैयारी करो।

क़ियामत कैसे आएगी?

फिर वही मिसाल सामने रखिए। जब स्कूल का साल ख़त्म हो जाता है, पढ़ाई और इम्तिहान ख़त्म हो जाते हैं, नतीजे का दिन क़रीब आता है, उस वक़्त आपने देखा है कि स्कूल के मामूलात में क्या

तब्दीली हो जाती है।

इम्तिहान ख़त्म होते ही क्लासें बन्द, न कोई उस्ताद मिलता है, न लड़का। किसी का कुछ पता नहीं होता कहां है, लड़कों को अपनी किताबों, कापियों की भी ख़बर नहीं रहती।

जिस लड़के ने साल भर शरारत की है, उसकी शरारत भी उस वक़्त कम हो जाती है। हर लड़का घबराया, फ़िक्र में डूबा नज़र आता है, क्योंकि सबको अपने नतीजे की फ़िक्र होती है।

और फिर ख़ास नतीजे के दिन सब एक बार फिर जमा होते हैं, ताकि अच्छे-बुरे नतीजे की ख़बर मालूम हो।

इस छोटी-सी मिसाल पर आप उस क़ियामत के मंज़र पर ग़ौर कीजिए, जो सारी दुनिया के करोड़ों-अरबों इंसानों के नतीजे का दिन होगा, क़ियामत इस तरह आएगी कि पहले दुनिया के सब जानदार मर जाएंगे, ज़मीन-आसमान सब बे-ताक़त होकर रूई के गालों की तरह उड़ते फिरेंगे, दुनिया की कोई चीज़ अपनी असली शक्ल पर बाक़ी नहीं रहेगी।

लेकिन आप सोचते होंगे कि क्या यह सब कुछ अपने-आप हो जाएगा? नहीं। आपने फ़रिश्तों के बयान में पढ़ा है, एक बड़े फ़रिश्ते इसराफ़ील अलैहिस्सलाम हैं। उनके सुपुर्द यही काम है, वह अल्लाह के हुक्म से एक ज़ोरदार सीटी बजाएंगे, जिसे सूर फूंकना कहते हैं।

इस सीटी के बजते ही सारी दुनिया उनट-पलट हो जाएगी, फिर अल्लाह के हुक्म से हज़रत इसराफ़ील अलैहि० दूसरा सूर फूकेंगे और सब लोग ज़िंदा होकर एक जगह जमा हो जाएंगे, वहां किसी को एक दूसरे की ख़बर न होगी, सब अपनी-अपनी फ़िक्र में होंगे और नतीजे का इन्तिज़ार करते होंगे।

इसके बाद अल्लाह मियां हर-हर आदमी के अच्छे-बुरे काम उनके सामने लाएंगे और हर एक के कामों का बदला देंगे। इसी बदले के दिन को क़ियामत का दिन या यौमुलजज़ा कहते हैं।

क़ियामत की निशानियां

अल्लाह तआला ने क़ियामत का सही वक़्त तो नहीं बताया, मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह मियां की बताई हुई कुछ निशानियां बता दी हैं। जब ये निशानियां दुनिया में नज़र आने लगें तो समझो क़ियामत क़रीब आ गई है।

वे निशानियां ये हैं—

- जब क़ियामत क़रीब आएगी तो दुनिया में गुनाह के काम ज़्यादा होने लगेंगे।
- लोग अपने मां-बाप की नाफ़रमानियां और उन पर सख़्तियां करने लगेंगे।
- अमानत में ख़ियानत होने लगेगी।
- गाने-बजाने, नाच-रंग बढ़ जाएंगे।
- लोग अपने से पहले बुज़ुर्गों को बुरा कहने लगेंगे।
- बे-पढ़े और कम पढ़े-लिखे लोग सरदार बन जाएंगे।
- चरवाहे वग़ैरह और कम दर्जे के लोग बड़ी और ऊंची-ऊंची इमारतें बनाने लगेंगे।

नाक़ाबिल लोगों को बड़े ओहदे मिलने लगेंगे।

जब दुनिया में यह बातें नज़र आने लगें, तो समझो कि क़ियामत का दिन क़रीब आ गया है।

सवालात

1. नतीजे का दिन किस दिन को कहते हैं?

2. नतीजे के दिन क्या होगा?

3. नतीजे के दिन की तारीख़ क्यों नहीं बताई गई?

4. क़ियामत का दिन-तारीख़ पूछने वाले साहब को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्या जवाब दिया?

5. क़ियामत किस तरह आएगी?

6. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ियामत की क्या निशानियां बताई हैं?

तक़्दीर क्या है?

किसी बढ़ई से आप मेज़ बनवाएं और उससे पूछें, क्यों भाई! तुम्हारे ख़्याल में यह मेज़ कितने साल चल जाएगी?

बढ़ई आपको अपने तजुर्बे और इल्म से जवाब देगा कि मेज़ पांच या दस साल चल जाएगी।

उसके जवाब पर हो सकता है आप यह सोचें कि बढ़ई को अगले पांच-दस साल का हाल कैसे मालूम हो गया, मगर नहीं, यह कोई ताज्जुब की बात नहीं। बढ़ई ने मेज़ बनाई है। उसे ख़ूब मालूम है कि उसमें किस क़िस्म की लकड़ी लगाई है, पाए कितने मोटे हैं, कीलें कैसी हैं, इन तमाम चीज़ों को वह ख़ूब जानता है। इसी तजुर्बे और इल्म की बुनियाद पर उसने कह दिया कि मेज़ की उम्र इतने साल हो सकती है। इसी तरह एक मेमार (मकान बनाने वाला मिस्त्री) मकान की उम्र बता सकता है, एक कुम्हार बर्तन की उम्र बता सकता है, क्योंकि इन लोगों

को अपनी बनाई हुई चीज़ों का ख़ूब अन्दाज़ा है।

अल्लाह तआला के इसी इल्म को तक़्दीर कहते हैं। हर मुसलमान को अपनी तक़्दीर पर भी ईमान और यक़ीन रखना चाहिए, यानी उसे यह समझना चाहिए कि मेरी ज़िंदगी में जो भी अच्छे-बुरे हालात पेश आते हैं, वे सब ख़ुदा के इल्म और अन्दाज़े के मुताबिक़ हैं। उसके इल्म और अन्दाज़े से कोई चीज़ बाहर नहीं।

सवालात

1. आप तक़्दीर का क्या मतलब समझते हैं?

2. मुसलमान को तक़्दीर पर क्या यक़ीन रखना चाहिए?

मश्क़ (अभ्यास)

नोटः— पढ़ाने वाले नीचे के इशारे आसान ज़ुबान में बच्चों को समझाएं और नीचे दिए उन्वान पर मज़्मून लिखवाएं—

उन्वान (शीर्षक)

'तक़्दीर पर यक़ीन रखने के फ़ायदे'

इशारे

1. इंसान अपने बस भर अमल और कोशिश के बावजूद ख़ुदा पर भरोसा रखता है।

2. अगर कामियाबी होती है तो घमंड नहीं करता।

3. अगर नाकामी होती है तो मायूस नहीं होता।

4. अक्सर ऐसे लोग जो तक़्दीर पर यक़ीन नहीं रखते, अपने मक़्सद में नाकाम होकर जान गंवा बैठते हैं।

क्या मरने के बाद ज़िंदा होंगे?

क़ियामत में सबको दोबारा ज़िंदा होना ज़रूरी है, इसलिए कि जब तक सब सामने मौजूद न हों, उनके आमाल का हिसाब कैसे होगा और सबको अच्छा या बुरा बदला कैसे मिलेगा?

लेकिन यह कैसे मुम्किन है कि मरने और मिट्टी होने के बाद फिर सब ज़िंदा हो जाएंगे, इसके समझने के लिए पहले आप ख़ुद अपने ऊपर ग़ौर करें।

अगर आपकी उम्र दस साल की है तो आज से ग्यारह साल पहले क्या किसी को मालूम था कि आप इस शक्ल व सूरत में दुनिया में आएंगे, लेकिन अल्लाह ने चाहा और आप दुनिया में आए।

अब ज़रा सोचिए कि जो ख़ुदा ऐसी चीज़ को दुनिया में ला सकता है, जिसके बारे में लोग सोच भी नहीं सकते थे, तो क्या वह ख़ुदा उसी चीज़ को ख़त्म करके फिर दोबारा ज़िंदा नहीं कर सकता?

अच्छा ख़ुद तजुर्बा करके देखिए कि अगर क्राफ़्ट क्लास में आप से कहा जाए कि गत्ते का एक घर बनाइए और इससे पहले आप ने कभी न बनाया हो, तो शुरू में कितनी दुश्वारी होगी, लेकिन मेहनत करके आप बना लेंगे।

अब अगर मास्टर साहब आप के बनाए हुए घर को तोड़ दें और फिर आप से कहें कि फिर दोबारा बनाइए तो सोचिए कि अब भी आपको उतनी दुश्वारी होगी जितनी पहली बार हुई थी?

नहीं, बिल्कुल नहीं। अब तो आप एक बार मकान बनाकर उसकी बनावट का तरीक़ा समझ चुके हैं, इसलिए आपको कोई

दिक़्क़त न होगी।

अब तो आप समझ गए होंगे, अल्लाह तआला किस तरह दुनिया को ख़त्म करने के बाद दोबारा ज़िंदा कर देंगे।

जिस ख़ुदा ने एक बार इतनी अच्छी शक्ल व सूरत बनाई, उसके लिए दोबारा क्या मुश्किल है?

सवालात

1. दोबारा ज़िंदा होना क्यों ज़रूरी है?
2. दोबारा ज़िंदगी कैसे मुम्किन है?
3. दोबारा जी उठने के बाद क्या होगा?

अमली काम

क़ुरआन शरीफ़ में तीसरे सिपारे के तीसरे रुकूअ में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का एक वाक़िया आया है जिसमें अल्लाह तआला ने उन्हें यह बात समझाई है कि मरने के बाद ज़िंदा होना कैसे मुम्किन है?

आप अपने मोहतरम उस्ताद से यह वाक़िया सुनिए और इसको अपने लफ़्ज़ों में अपनी कापी में लिखिए।

सब पाक रहो, सब साफ़ रहो

हमने पाकी और सफ़ाई के लिए दो लफ़्ज़ इसलिए इस्तेमाल किए हैं कि इन दोनों में फ़र्क़ है। हो सकता है कि एक कपड़ा देखने में साफ़-सुथरा हो, मगर पाक न हो और यह भी हो सकता है कि एक कपड़ा देखने में गन्दा मालूम होता हो, मगर पाक हो। साफ़ तो हर कपड़े को कह सकते हैं जो देखने में साफ़-सुथरा मालूम होता हो और पाक उस कपड़े को कहते हैं जिस पर अन्दर-बाहर पेशाब के क़तरे या और कोई गन्दगी न लगी हो, चाहे वह भड़कदार नज़र आता हो या नहीं।

नमाज़ के क़ाबिल वही कपड़े होते हैं जो बिल्कुल पाक हों, यही हाल जिस्म का है। आपने नहा-धो कर ख़ुश्बू लगा ली, देखने वाले आप से मिलकर बहुत ख़ुश होंगे, लेकिन पेशाब करके आपने इस्तिंजा नहीं किया, पेशाब के क़तरे बदन पर लग गए, बस आपका जिस्म चाहे कैसे ही साफ़-सुथरा नज़र आता हो, ख़ुश्बू आ रही हो, मगर उसे पाक नहीं कह सकते, नमाज़ के लिए बदन और कपड़ों का हर क़िस्म की गन्दगी से पाक होना ज़रूरी है।

पाकी हासिल करने के तरीक़े

पाख़ाना-पेशाब करने के बाद पाकी हासिल करने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि पहले गन्दी जगह को मिट्टी के ढेले से सुखाया जाए, फिर पानी से धोया जाए, ताकि गन्दगी बिल्कुल बाक़ी न रहे।

दूसरा तरीक़ा यह है कि सिर्फ़ पानी से गन्दी जगह को अच्छे तरीक़े से धो लिया जाए।

मिट्टी और पानी दोनों से पाकी हाहिस करने में ज़्यादा सवाब होता है, जो लोग मिट्टी और पानी दोनों से इस्तिंजा करते हैं, उनके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है, 'अल्लाह तआला ख़ूब अच्छी तरह पाकी हासिल करने वालों को पसन्द करते हैं।'

गन्दगी दूर करने के लिए सिर्फ़ बायां हाथ इस्तेमाल करना चाहिए, दाहिना हाथ खाने-पीने और साफ़-सुथरे काम करने के लिए है। अगर सफ़र मे हों या ऐसी जगह, जहां पानी न मिल सके तो पेशाब-पख़ाना करने के बाद मिट्टी या ढेलों से पाकी हासिल कर लेनी चाहिए और जब पानी मिले तो उस जगह को धो लिया जाए। पेशाब के लिए एक ढेला और पाख़ाने के लिए तीन, पांच या सात ढेले ज़रूरत के मुताबिक़ इस्तेमाल करने चाहिएं।

पेशाब करने में एहतियात

बहुत से लोगों को देखा गया कि रास्ते के किनारे पेशाब करने बैठ जाते हैं, फिर इस्तिंजा करते हुए चलते रहते हैं और बे-तकल्लुफ़ बातें करते रहते हैं। यह बात तह्ज़ीब और अदब के तो बिल्कुल ख़िलाफ़ है ही, गुनाह भी है, क्योंकि इस्तिंजा करने की हालत में बातें करना मना है।

दूसरी गन्दगियों से बचना

जिस तरह अपने पेशाब वग़ैरह के क़तरों से बदन और कपड़ों को बचाना ज़रूरी है, उसी तरह इस बात का भी पूरा ख़्याल रखना

चाहिए कि चलते-फिरते नाली की छींटें या जानवरों के पेशाब की गन्दगी कपड़ों पर न आए, क्योंकि गन्दगी कोई भी हो, बदन और कपड़ों को नापाक कर देती है।

ख़ून-पीप की नापाकी

ख़ून-पीप भी इसी तरह नापाक है, जैसे पेशाब, जिस्म के किसी हिस्से से ख़ून-पीप निकल आए और कपड़ों पर या बदन पर लग जाए तो उससे वुज़ू भी टूट जाता है और कपड़े भी नमाज़ के क़ाबिल नहीं रहते; जब तक उसे धो न लिया जाए, ख़ून-पीप जिस्म के अन्दर से न निकले, बाहर से लग जाए, तब भी कपड़े नापाक कहे जाएंगे।

सवालात

1. पाकी और सफ़ाई में क्या फ़र्क़ है?

2. मिट्टी और पानी, दोनों से इस्तिंजा करने वालों के बारे में अल्लाह तआला ने क्या फ़रमाया है?

3. इस्तिंजा करने में कौन सा तरीक़ा तह्ज़ीब और अदब के ख़िलाफ़ बतलाया गया है?

पानी

पानी दो क़िस्म के होते हैं–

1. **जारी (बहने वाला) पानी** :– जैसे समुन्दर, नदी, नहर, कुवां, नल, बारिश, बर्फ़, ओला, चश्मा।

2. ठहरा हुआ पानी :– जैसे घड़े, मटके, फ़िलटर, टंकी, या किसी बर्तन में रखा हुआ पानी।

ये दोनों क़िस्म के पानी बिल्कुल पाक हैं, इनसे वुज़ू और ग़ुस्ल और हर क़िस्म की पाकी हासिल करना जायज़ है।

पानी कब नापाक हो जाता है

1. बहने वाले कसीर या जारी पानी में अगर कोई ख़ून वाला जानवर गिर कर मर जाए या मरा हुआ गिर जाए और कोई गन्दगी गिर जाए तो यह पानी उस वक़्त तक नापाक नहीं होता, जब तक उसके रंग-बू-मज़ा में से कोई एक चीज़ न बदल जाए।

जब तक जारी पानी की तीनों बातें अपनी जगह रहें और उसके असली रंग-बू-मज़ा पर कोई असर न पड़े, उस वक़्त तक यह नापाक नहीं होगा, चाहे कितनी ही बड़ी गन्दगी गिर जाए।

2. जंगल और गांव देहात में गढ़ों में बरसात का पानी जमा हो जाता है, यह पानी भी उस वक़्त तक बिल्कुल पाक है जब तक यक़ीनी तौर पर उसमें किसी नापाक चीज़ के गिर जाने का इल्म न हो जाए।

3. तालाब या हौज़ के पानी में पत्ते गिर जाने से या ज़्यादा देर रुके रह जाने की वजह से अगर उसका रंग मज़ा वग़ैरह बदल जाए, तो यह नापाक नहीं होता, लेकिन इस क़िस्म के पानी को अगर तबियत गवारा न करे और दूसरा साफ़ पानी आसानी से मिल सके, तो इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

ठहरा हुआ थोड़ा पानी

1. ठहरा हुआ थोड़ा पानी ज़रा-सी गन्दगी गिर जाने से नापाक हो जाता है, जैसे घड़े या टंकी मे पानी रखा था, उसमें एक क़तरा ख़ून या पेशाब गिर गया। अब यह पानी इस्तेमाल के क़ाबिल नहीं रहा, चाहे उसका रंग-बू-मज़ा बदले या न बदले।

2. इसी तरह अगर थोड़े पानी में कोई ख़ून वाला जानवर गिर कर मर जाए या मरा हुआ गिर जाए, तो यह पानी नापाक हो जाएगा।

3. ठहरा हुआ पानी किसी पाक चीज़ के मिल जाने से उस वक़्त तक वुज़ू और ग़ुस्ल के क़ाबिल रहता है, जब तक उसका नाम न बदल जाए, उसमें रंग-बू-मज़ा वग़ैरह बदलने का एतबार नहीं है, जैसे पानी में शकर और दूध मिला दिया और उसका नाम शरबत रख दिया गया, अब उससे वुज़ू-गुस्ल जायज़ नहीं रहा।

दूसरी शक्ल यह कि पानी में कीड़े मारने या सफ़ाई के लिए दवा डाली गई, चाहे उससे पानी का रंग और मज़ा अदल जाए, मगर उसे पानी ही कहा जाता है, नाम नहीं बदलता, इस शक्ल में इस पानी से वुज़ू और ग़ुस्ल जायज़ है। यह पानी पाक है।

नल, टयूब वेल, कुंवां और किसी भी मशीन के ज़रिए ज़मीन से निकला हुआ पानी जारी पानी के हुक्म में है। इसके मसाइल और अहकाम भी वही सब होंगे जो आप जारी पानी के हुक्म में पढ़ आए हैं।

पानी के बारे में ज़रूरी बात

कोई पानी उस वक़्त तक नापाक नहीं होता जब तक कि उसमें

किसी गन्दगी के गिरने का यक़ीन न हो जाए, सिर्फ़ शक व शुबहे से पानी को नापाक समझना मुनासिब नहीं।

कुंवां पाक करने का तरीक़ा

पहले कुंएं से वह गन्दगी निकाली जाए जिसकी वजह से कुंवां नापाक हुआ है, इसके बाद कुंएं से इतना पानी निकाला जाए कि उसमें गन्दगी का कोई असर न रहे, यानी गन्दगी का रंग-बू-मज़ा वग़ैरह बिल्कुल ख़त्म हो जाए।

गन्दे कपड़े केसे पाक करें

किसी क़िस्म की गन्दगी, पेशाब, पाख़ाना, ख़ून-पीप, शराब वग़ैरह अगर बदन या कपड़े पर लग जाए तो उसे अच्छी तरह धो लेना चाहिए, चाहे कम हो या ज़्यादा, सफ़ाई और पाकी का यही तक़ाज़ा है।

कपड़े पाक करने का तक़ाज़ा यह है कि पहले कपड़े से गन्दगी को दूर किया जाए, फिर पानी डाल कर इतना धोए कि नजासत का रंग और बू दूर हो जाए, फिर तीन बार पानी डाल कर कपड़े को पाक करे। हर बार नया पानी ले और ख़ूब निचोड़ ले।

हां, अगर भूले से किसी के बदन या कपड़े पर गन्दगी रह गई और उसने नमाज़ पढ़ ली तो नजासते ग़लीज़ा जैसे पाख़ाना, एक अन्दाज़े के मुताबिक़ साढ़े तीन माशा (3 ¼ ग्राम) माफ़ है, और पतली नजासत जैसे पेशाब, ख़ून, शराब वग़ैरह अंग्रेज़ी पैसे के रुपये के बराबर माफ़ है। यानी नमाज़ हो जाएगी, मगर मकरूह होगी, सवाब कम होगा।

नजासते ख़फ़ीफ़ा, हल्की गन्दगी चौथाई कपड़े या चौथाई उज़्व के बराबर माफ़ है।

नजासते ग़लीज़ा ये चीज़ें हैं

आदमी का पेशाब, पाख़ाना, जानवरों का पाख़ाना, हराम जानवरों का पेशाब, मुर्ग़ी और बत्तख़ की बीट, ख़ून और शराब, ये सब चीज़ें नजासते ग़लीज़ा हैं।

नजासते ख़फ़ीफ़ा

हलाल जानवरों का पेशाब और हराम परिंदों की बीट, नजासते ख़फ़ीफ़ा है।

जूठा पानी

इंसान के अलावा यहां हम सिर्फ़ उस जानवरों के जूठे पानी का ज़िक्र कर रहे हैं जो घरों में रहते हैं, या पाले जाते हैं और दिन-रात इन जानवरों के जूठे पानी के मस्ले पेश आते रहते हैं–

1. आदमी का जूठा, हर इंसान का जूठा पाक है, चाहे वह किसी मज़हब से ताल्लुक़ रखता हो, शराब पीने वाले आदमी का जूठा पानी मक्रूह है।

2. बकरी, भेड़, दुंबा, गाय,भैंस, हिरन ,ऊंट, नील गाय, घोड़ा, घरों में रहने वाली चिड़िया (गौरैया) मुर्ग़ी, बत्तख़, कबूतर, तोता, ख़रगोश, इन सब का जूठा पानी पाक है।

3. चूहे का जूठा पानी मक्रूह है। इस्तेमाल नहीं करना चाहिए,

घरों में रहने वाला ख़ुश्की का मेंढक, बिल्ली वग़ैरह का झूठा पानी मक्रूह है।

कुत्ता और हाथी का जूठा पानी नापाक है।

सवालात

1. कौन से पानी पाक होते हैं?

2. बहने वाला जारी पानी कब नापाक होता है?

3. ठहरा हुआ पानी कब नापाक होता है?

4. ठहरे हुए पानी में अगर पाक चीज़ मिल जाए तो क्या हुक्म है?

5. कुंवां पाक करने का क्या तरीक़ा है?
6. गन्दे कपड़ों को पाक करने का क्या तरीक़ा है?
7. नजासते ग़लीज़ा और ख़फ़ीफ़ा किस को कहते हैं?
8. किन जानवरों का जूठा पाक है?
9. किन जानवरों का जूठा नापाक है?
10. किन जानवरों का जूठा मकरूह है?
11. इंसान के जूठे पानी के बारे में क्या हुक्म है?

हम केसे पाक हों?

यह तो आप को मालूम हो गया कि पाक और नापाक पानी कौन-से होते हैं। अब यह भी समझ लीजिए कि पानी से बदन को पाक करने के क्या तरीक़े हैं–

(1) पहला तरीक़ा वुज़ू है।

वुज़ू का पूरा तरीक़ा तो आप पहले हिस्से में पढ़ चुके हैं, यहां हम वुज़ू की वे ज़रूरी बातें बताएंगे, 'जिन्हें वुज़ू के फ़र्ज़' कहते हैं।

वुज़ू में चार फ़र्ज़ हैं। इनमें से एक फ़र्ज़ भी छूट जाए तो वुज़ू नहीं होगा–

1. पेशानी के बालों से ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक चेहरा धोना,

2. दोनों हाथ कुहनियों समेत धोना,

3. सर के चौथाई हिस्से का एक बार मसह करना,

4. दोनों पैर टख़नों समेत धोना,

वुज़ू कब टूट जाता है?

1. पाख़ाना-पेशाब निकलने से,

2. जिस्म के किसी हिस्से से ख़ून-पीप निकलने से,

3. गन्दी हवा के निकलने से,

4. मुंह भर के क़ै हो जाने से,

इन तमाम बातों में से कोई एक पेश आ जाए तो वुज़ू टूट जाता

है और दोबारा वुज़ू करना ज़रूरी होता है।

(2) पाकी हासिल करने का दूसरा तरीक़ा ग़ुस्ल (नहाना) है। ग़ुस्ल में तीन फ़र्ज़ होते हैं। अगर इनमें से एक भी छूट जाए तो ग़ुस्ल नहीं होता।

1. कुल्ली करना (अगर रोज़ा न हो तो ग़रारा भी करना चाहिए),

2. नाक में पानी देना,

3. पूरे बदन पर पानी बहाना (बाल के बराबर भी कोई जगह सूखी न रहे)

आमतौर से तेरह-चौदह साल की उम्र से पहले बच्चों-बच्चियों पर न ग़ुस्ल फ़र्ज़ होता है, न टूटता है।

इस उम्र के बाद ग़ुस्ल फ़र्ज़ होता है और टूटता है। इसकी तफ़सील हम अगले किसी हिस्से में बयान करेंगे।

ज़ख़्मों की पाकी

बदन में किसी जगह चोट लग जाए, फोड़ा-फुंसी निकल आए, हड्डी टूट जाए और उस पर पानी का लगना नुक़्सान देता हो, ऐसी शक्ल में वुज़ू या ग़ुस्ल करते वक़्त चोट वाले हिस्से पर भीगे हाथ से मसह कर लेना काफ़ी है। मसह का मतलब है भीगे हुए हाथ का जिस्म पर फेरना, मसह नए पानी से हाथ भिगोकर करना चाहिए।

मसह सिर्फ़ उस जगह का करना चाहिए जहां ज़ख़्म हो या प्लास्टर और लकड़ी की पट्टी की वजह से धोना मुम्किन न हो।

अगर मसह भी नुक़्सान दे तो उसे भी छोड़ा जा सकता है, बाक़ी जगह पानी बहाने से वुज़ू या ग़ुस्ल हो जाएगा।

तयम्मुम

अल्लाह ने हम पर क्या-क्या एहसान किए हैं, कोई उनको गिनना चाहे भी तो नहीं गिन सकता।

पाकी के तरीक़ों ही को देख लीजिए– कोई बीमार हो, मजबूर हो, डॉक्टर ने पानी इस्तेमाल करने से मना कर दिया हो, सफ़र कर रहा हो और पानी न मिले, नमाज़ का वक़्त हो जाए, ऐसे मौक़ों पर वही वुज़ू और ग़ुस्ल की पाकी जो पानी के ज़रिए हासिल की जाती है, मिट्टी के ज़रिए भी हासिल की जा सकती है। इस मिट्टी से पाकी हासिल करने को तयम्मुम कहते हैं।

तयम्मुम किन मजबूरियों की वजह से किया जा सकता है?

1. बीमार हो और किसी डॉक्टर, हकीम या तजुर्बेकार आदमी ने पानी इस्तेमाल करने को मना कर दिया हो,

2. किसी मजबूरी की वजह से पानी हासिल न हो सकता हो, जैसे पानी घर के बाहर है और कर्फ़्यू आर्डर लगा है, बाहर नहीं जा सकते या पानी के पास कोई ख़तरनाक जानवर बैठा है, पानी किसी दुश्मन के क़ब्ज़े में है,

3. या थोड़ा पानी है और डर है कि अगर इसे वुज़ू में ख़र्च कर लिया तो प्यास से तक्लीफ़ होगी, कुंवां है मगर डोल रस्सी नहीं।

कोई सफ़र कर रहा हो किसी सवारी से या पैदल, रास्ते में नमाज़ का वक़्त हो जाए और एक मील दूर तक पानी मिलने की

उम्मीद न हो, कोई बताने वाला न हो, इन तमाम शक्लों में तयम्मुम करना जायज़ है।

तयम्मुम किन चीज़ों से किया जा सकता है?

हर ऐसी चीज़ से, जो आग में डालने से न जले, न गले, उससे तयम्मुम किया जा सकता है।

इस क़ायदे में हर क़िस्म की मिट्टी और उससे बनी हुई चीज़ें, हर तरह का पत्थर और उससे बनी हुई चीज़ें आ जाती हैं।

तयम्मुम की ज़रूरी बातें

1. नीयत करना,

2. दोनों हाथ मिट्टी पर मारकर मुंह पर मलना,

3. दोनों हाथ मिट्टी पर मारकर दोनों हाथों पर कुहनियों समेत मलना,

हाथ मलने में इस बात का ख़्याल रखना चाहिए कि न इतनी मिट्टी लगे कि हाथ-मुंह पर धूल जमा हो जाए और न ज़रा सी जगह रह जाए, जिस पर हाथ न फिरा हो।

तयम्मुम में इन बातों का भी ख़्याल रखना चाहिए

- अगर उंगली में अंगूठी हो तो उसे हिला लिया जाए,
- हाथों में चूड़ियां या ज़ेवर हों तो हटा कर हाथ फेर लिया जाए,
- उंगलियों में उंगलियां डाल कर ख़िलाल कर लिया जाए,

- दाढ़ी हो तो दाढ़ी में उंगलियां डालकर ख़िलाल कर लिया जाए,

ग़ुस्ल का तयम्मुम

ग़ुस्ल का तयम्मुम भी बिल्कुल इसी तरह किया जाता है, सिर्फ़ नीयत बदल जाती है।

वुज़ू के तयम्मुम में यह नीयत होगी कि मैं वुज़ू की पाकी हासिल करने के लिए तयम्मुम करता हूं।

और ग़ुस्ल के तयम्मुम में यह नीयत होगी कि मैं ग़ुस्ल की पाकी हासिल करने के लिए तयम्मुम करता हूं।

नीयत के अलावा वही दो फ़र्ज़ इसमें भी अदा करने होंगे, जो वुज़ू के तयम्मुम में होते हैं।

तयम्मुम कब टूट जाता है

जिन चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है उन्हीं से तयम्मुम भी टूटता है। इसके अलावा जिस वजह से तयम्मुम किया गया है, उस वजह के ख़त्म होने से भी तयम्मुम टूट जाता है।

जैसे किसी ने बुख़ार की वजह से या पानी न मिलने की वजह से तयम्मुम किया तो ज्यों ही बुख़ार उतरेगा या पानी मिलेगा, चाहे जिस्म के अन्दर कोई चीज़ निकले या न निकले, तयम्मुम टूट जाएगा और ग़ुस्ल के तयम्मुम के लिए भी यही बात समझिए कि जिन चीज़ों से ग़ुस्ल टूटता है , उन्हीं से ग़ुस्ल का तयम्मुम भी टूट जाता है और जिस वजह से या मजबूरी से ग़ुस्ल का तयम्मुम किया था, उस मजबूरी के ख़त्म हो जाने से भी ग़ुस्ल का तयम्मुम टूट जाएगा।

तयम्मुम की कुछ ज़रूरी बातें

एक बार तयम्मुम करने के बाद जब तक मजबूरी बाक़ी रहे और तयम्मुम को तोड़ने वाली कोई बात पेश न आ जाए, चाहे जितनी नमाज़ें पढ़ सकते हैं।

अगर किसी ने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने या छूने के लिए, अज़ान कहने के लिए, जनाज़े की नमाज़ पढ़ने के लिए या तिलावत के सज्दे करने के लिए तयम्मुम किया था, तो वह उस तयम्मुम से फ़र्ज़ नमाज़ भी अदा कर सकता है।

अगर किसी ने पानी न मिलने की वजह से तयम्मुम कर लिया और नमाज़ पढ़ ली, फिर पानी मिल गया तो नमाज़ दोहराने की ज़रूरत नहीं है, चाहे पानी वक़्त के अन्दर मिला हो या बाद में।

अकेला आदमी केसे नमाज़ पढ़े?

अकेले नमाज़ पढ़ने वाले को मुंफ़रिद कहते हैं।

आप मस्जिद में पहुंचे और जमाअत की नमाज़ ख़त्म हो चुकी हो या किसी बीमारी या मजबूरी की वजह से आप जमाअत की नमाज़ में शरीक न हो सकें, ऐसी सूरत में आप अकेले नमाज़ पढ़ सकते हैं।

अकेले नमाज़ अदा करने में पहली बात तो यह समझ लीजिए कि नमाज़ की तमाम दुआएं आपको ख़ुद पढ़नी हैं।

अब मिसाल के तौर पर यों समझिए कि आप ज़ुहर के चार फ़र्ज़ अकेले पढ़ना चाहते हैं, इसका तरीक़ा यह होगा–

● नीयत में 'इस इमाम के पीछे' का लफ़्ज़ आप नहीं कहेंगे। नीयत बांधकर पहली रकूअत में (सना) सुबहा-न-क, अलहम्दु और कोई सूरः पढ़ेंगे।

● रुकूअ में खड़े होते वक़्त पूरी तस्बीह पढ़ेंगे, दोनों सज्दे मामूल के मुताबिक़ करेंगे।

● दूसरी रकूअत में अल हम्दु और कोई सूरः पढ़ेंगे। दो रकअत के बाद पहले क़ायदे में सिर्फ़ अत्तहीयात पढ़ेंगे, तीसरी चौथी रकूअत में सिर्फ़ अलहम्दु पढ़ेंगे। चार रकूअत के बाद आख़िरी क़ादा में अत्तहीयात, दोनों दरूद शरीफ़ और कोई दुआ पढ़कर सलाम फेर देंगे।

जमाअत की नमाज़ कैसे पढ़ें?

तंहा नमाज़ पढ़ने में एक नमाज़ का सवाब मिलता है और जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने में सत्ताईस नमाज़ों का सवाब मिलता है। जमाअत की नमाज़ पढ़ाने वाले को 'इमाम' कहते हैं और इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले को 'मुक़्तदी' कहते हैं। इस नमाज़ में मुक़्तदी सब दुआएं नहीं पढ़ता है, इसका तरीक़ा यह है–

● नीयत में मुक़्तदी को 'इस इमाम के पीछे' का लफ़्ज़ कहना चाहिए,

● इसके बाद हाथ बांधकर अलहम्दु, सूरः और रुकूअ से खड़े होते वक़्त 'समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह' नहीं पढ़ना चाहिए, बाक़ी सब दुआएं पढ़नी चाहिए।

सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ें

सुन्नत :– उस नमाज़ को कहते हैं जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आमतौर पर पढ़ा हो और कभी-कभी छोड़ भी दिया हो।

सुन्नत की दो क़िस्में हैं–

1. मुअक्कदा, 2. ग़ैर मुअक्कदा

1. मुअक्कदा :– उस सुन्नत को कहते हैं जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमेशा पढ़ा हो, और बग़ैर किसी मजबूरी के कभी न छोड़ा हो, जैसे फ़ज्र के फ़र्ज़ों से पहले दो सुन्नत,

2. ग़ैर मुअक्कदा :– उस सुन्नत नमाज़ को कहते हैं जिसे

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अक्सर पढ़ा हो, लेकिन कभी-कभी बग़ैर किसी मजबूरी के छोड़ भी दिया हो, जैसे अस्र के फ़र्ज़ों से पहले की चार सुन्नतें।

सुन्नते मुअक्कदा नमाज़ ज़रूर पढ़ना चाहिए, इसके छोड़ने में गुनाह होता है। सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा के पढ़ने में सवाब होता है, छोड़ने में कोई गुनाह नहीं।

नफ़्ल

नफ़्ल उन कामों को कहते हैं जिनका करना सवाब है और न करने में कोई गुनाह नहीं। इन्हें 'मुस्तहब' भी कहते हैं। असल में नफ़्ल नमाज़ फ़र्ज़ों के साथ इसीलिए रखी गई है कि फ़र्ज़ों में अगर कोई कसर या नुक़सान रह जाए तो वह नफ़्लों से पूरा हो जाए।

सुन्नते मुअक्कदा नमाज़ें	सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा नमाज़ें	नफ़्ल नमाज़
फ़ज्र के फ़र्ज़ों से पहले दो रकअत		जुहर के फ़र्ज़ों और दो सुन्नतों के बाद
दो रकअत		
जुहर से पहले चार रकअत	अस्र से पहले चार रकअत	
बाद में दो रकअत		मग़्रिब की सुन्नतों के बाद दो रकअत
मग़्रिब के बाद दो रकअत	इशा से पहले चार रकअत	इशा के फ़र्ज़ों के बाद वित्र से पहले दो रकअत
इशा के बाद दो रकअत		वित्र के बाद दो रकअत

वित्र की नमाज़

वित्र की नमाज़ वाजिब है और वाजिब का दर्जा यों समझिए कि फ़र्ज़ों से कम और सुन्नतों से ज़्यादा होता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो आदमी वित्र न पढ़े वह हमारी जमाअत में से नहीं है।

आमतौर से वित्र की नमाज़ इशा के फ़र्ज़ के बाद की दो सुन्नत और दो नफ़्ल के बाद पढ़ी जाती है, लेकिन जो लोग आख़िर रात में तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते हैं, उन्हें तहज्जुद की नफ़्लों के बाद वित्र की नमाज़ पढ़नी चाहिए।

वैसे तो वित्र की नमाज़ बग़ैर जमाअत के पढ़ी जाती है, सिर्फ़ रमज़ानुल मुबारक में तरावीह के बाद वित्र की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ना मुस्तहब है, इसमें ज़्यादा सवाब होता है।

तरीक़ा

वित्र की नमाज़ की पहली दो रकअतें उसी तरह होती हैं, जैसी सुन्नत नमाज़ की, अलबत्ता तीसरी रकअत में जब खड़े होते हैं तो अलहम्दु और कोई सूरः पढ़ने के बाद कानों तक हाथ उठाकर तक्बीर कहते हैं और फिर हाथ बांधकर दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ी जाती है। अगर किसी को दुआ-ए-क़ुनूत याद न हो तो 'रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तंव व फ़िल आख़िरति ह-स-न-तंव-व क़िना अज़ाबन्नार०' पढ़ ले। इसके बाद क़ायदे के मुताबिक़ रुकूअ, सज्दा, क़ादा करके सलाम फेर दे।

जुमा की नमाज़

ख़ूब, जुमा भी कैसा मुबारक दिन है, जिसके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तमाम दिनों से बेहतर जुमा का दिन है। इस दिन को अल्लाह तआला ने ईद मुक़र्रर फ़रमाया है।

इस दिन ग़ुस्ल करो (नहाओ), जिसके पास हो, वह ख़ुश्बू लगाए और मिस्वाक ज़रूर करो।

इसी दिन वह मुबारक नमाज़ होती है, जिसके लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया, 'ऐ ईमान वालो! जब जुमा की नमाज़ के लिए अज़ान कही जाए तो तुम अल्लाह के ज़िक्र यानी ख़ुत्बे और नमाज़ के लिए तेज़ी से चल दो और ख़रीदना-बेचना छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है।' (सूरः जूमा)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, 'जो कोई जुमा के दिन अच्छा ग़ुस्ल करे और जल्दी मस्जिद में पैदल जाए, फिर ख़ुत्बा सुने और इस दर्मियान में कोई बेकार काम न करे तो हर-हर क़दम के बदले पूरे एक साल की इबादत का सवाब मिलेगा।

मगर जुमा की नमाज़ सिर्फ़ मर्दों पर फ़र्ज़ है, औरतों पर नहीं। मर्दों में भी जो लोग बीमार हों, मुहताज हों, सफ़र में हों, उनको जुमा पढ़ना ज़रूरी नहीं है, वे लोग उस दिन भी ज़ुहर ही की नमाज़ पढ़ेंगे, हां अगर ऐसे लोग अपने शौक़ से जुमा की नमाज़ में शरीक हो जाएं तो कोई हरज नहीं, उनकी नमाज़ हो जाएगी, फिर ज़ुहर पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। औरतों के लिए भी यही हुक्म है।

जुमा की नमाज़ की ज़रूरी बातें

1. जुमा की नमाज़ शहर, क़स्बा और बड़े गांवों में हो सकती है, छोटे गांव या जंगल में दुरुस्त नहीं।

2. जुमा की नमाज़ जुहर के वक़्त में होनी चाहिए।

3. जुमा की नमाज़ से पहले ख़ुत्बा होना चाहिए।

4. जिस जगह जुमा की नमाज़ हो, वहां हर आदमी को आने की इजाज़त होनी चाहिए।

5. जुमा की नमाज़ सिर्फ़ जमाअत के साथ हो सकती है, तंहा नहीं।

ख़ुत्बा और नमाज़ का तरीक़ा

ख़ुत्बा का तरीक़ा यह है कि नमाज़ से कुछ देर पहले इमाम मिंबर पर बैठे और उसके सामने ख़ुत्बे की अज़ान कही जाए, फिर इमाम लोगों को मुख़ातब करके अरबी जुबान में तक़रीर करे या लिखा हुआ ख़ुत्बा पढ़े।

ख़ुत्बा यानी तक़रीर में अल्लाह तआला की तारीफ़, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र, सहाबा किराम और तमाम मुसलमानों के लिए दुआ, क़ुरआन पाक और हदीस की बातें और दूसरी वाज़ व नसीहत की बातें लोगों को बताई जाएं।

लम्बा-चौड़ा ख़ुत्बा पढ़ना ज़रूरी नहीं है, अगर अल्लाह तआला की तारीफ़ के दो तीन जुम्ले भी कह लिए जाएं तो ख़ुत्बा पूरा हो जाएगा।

थोड़ी देर पहला ख़ुत्बा पढ़कर इमाम ज़रा बैठ जाए, फिर खड़े होकर दूसरा ख़ुत्बा पढ़े, जब दूसरा ख़त्म हो जाए तो इमाम मिंबर से उतर कर मेहराब के सामने खड़ा हो जाए और मुअज़्ज़िन तक्बीर कहे।

फिर इमाम दो रक्अत जुमा की नमाज़ पढ़ाए। ख़ुत्बे के वक़्त न किसी क़िस्म की इबादत करनी चाहिए, न कोई दुन्यावी काम करना चाहिए।

चाहे इमाम से क़रीब हो या दूर, ख़ामोशी से ख़ुत्बे की ओर ध्यान लगाना चाहिए।

जुमा की रक्अतें

- 4 रक्अत सुन्नते मुअक्कदा,
- 2 रक्अत फ़र्ज़ जमाअत के साथ, फिर
- 4 रक्अत सुन्नते मुअक्कदा,

सवालात

1. जुमा के दिन और जुमा की नमाज़ के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्या फ़रमाया?
2. जुमा की नमाज़ के लिए अल्लाह तआला ने क्या फ़रमया है?
3. जुमा की नमाज़ के लिए क्या बातें ज़रूरी हैं?
4. अगर किसी को जुमा की नमाज़ न मिले, तो क्या करे?
5. जुमा के ख़ुत्बे में किन बातों का ज़िक्र होना चाहिए?
6. जुमा की नमाज़ किन लोगों पर फ़र्ज़ है?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी

सरकारे दो आलम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब अल्लाह के सच्चे दीन इस्लाम की तब्लीग़ का काम शुरू किया तो बहुत से लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर इस्लाम क़ुबूल किया और बहुत से लोग दूसरी जगहों पर मुसलमान हुए, फिर आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिले। इन तमाम लोगों को जिन्होंने ईमान की हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात की, उनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं।

सहाबी के मानी दोस्त और साथी के हैं। बहुत से साथियों को सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम और असहाब रज़ियल्लाहु अन्हुम कहते हैं।

हां, उस आदमी को सहाबी कहते हैं, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में मुसलमान हुआ हो, उसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात की हो और ईमान की हालत में उसका इंतक़ाल हुआ हो। ऐसी औरत को सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा कहते हैं।

यों तो तमाम सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हम का दर्जा आम मुसलमानों से ऊंचा है, मगर इन सहाबा किराम में चार सहाबा सबसे अफ़ज़ल और ऊंचे दर्जे वाले हैं–

1. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु :– यह बचपन से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोस्त और साथी रहे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनने के बाद सबसे पहले मर्दों में मुसलमान हुए। आपकी साहबज़ादी हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने निकाह किया।

आप ज़िंदगी भर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहे, मक्का से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मदीना आए, मदीना में साथ रहे और जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से सिधारे, अल्लाह को प्यारे हुए तो सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जानशीन और ख़लीफ़ा बनाए गए।

2. हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु :– 27 साल की उम्र में मक्का में मुसलमान हुए। आपकी साहबज़ादी हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने निकाह किया। आप उम्र भर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहे और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद ख़लीफ़ा बनाए गए।

3. हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु :– मक्का में मुसलमान हुए। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो साहबज़ादियां आप के निकाह में आईं। इसीलिए आपको ज़ुन्नूरैन (दो नूर वाला) भी कहते हैं। पहले मक्का में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी बीबी रुक़ैया से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने निकाह किया। मदीना आने के दो साल बाद जब बीबी रुक़ैया अल्लाह को प्यारी हो गईं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दूसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम से आपका निकाह हुआ।

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद तीसरे नम्बर पर आप ख़लीफ़ा हुए।

4. हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु :– यह जनाब अबू तालिब के साहबज़ादे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचेरे भाई थे। बच्चों में दस साल की उम्र में मुसलमान हुए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की छोटी साहबज़ादी हज़रत बीबी फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा से आप का निकाह हुआ। तमाम उम्र हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहे। हज़रत अस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद चौथे नम्बर पर ख़लीफ़ा बनाए गए। इन चारों सहाबा किराम का दर्जा बाक़ी तमाम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से ऊंचा है।

सवालात

1. सहाबी किसे कहते हैं?

2. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या रिश्ता था?

3. हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु कितनी उम्र में मुसलमान हुए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनका क्या रिश्ता था?

4. हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या रिश्ता था?

5. हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या रिश्ता था?

मक्का वाले मुसाफ़िर

मक्का शरीफ़ में 13 साल अल्लाह के दीन की तब्लीग़ करने के बाद जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हुक्म हुआ कि आप मदीना चले जाइए, तो आप हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को साथ लेकर मदीना तशरीफ़ ले गए।

आप से पहले आप के बहुत से साथी मदीना जा चुके थे और आपके जाने के बाद भी बहुत से सहाबा किराम मदीना चले गए।

उन तमाम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को जिन्होंने अपने पुराने वतन मक्का को छोड़ा और मदीना की रिहाइश अख़्तियार की, 'मुहाजिरीन' कहते हैं।

हिजरत के मानी हैं एक जगह छोड़कर दूसरी जगह जाना और मुहाजिर के मानी हैं, हिजरत करने वाला।

मुहाजिर की जमा (बहुवचन) मुहाजिरीन, बहुत से हिजरत करने वाले।

सवालात

1. हिजरत के मानी बताइए?
2. मुहाजिरीन किन लोगों को कहा जाता है?

अमली काम

नीचे लिखे हुए पांच मुहाजिरीन सहाबा किराम के नाम याद कीजिए और लाइब्रेरी से किताबें निकाल कर उनके हालात पढ़िए—

1. हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, 2. हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु, 3. हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु,4. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु, 5. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु।

मदीना के मददगार

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आने से पहले यहां के ख़ज़रज क़बीले के कुछ लोग मुसलमान हो चुके थे और वे दिल से चाहते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाएं और उनके साथ रहें।

चुनांचे जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हमु और ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो मदीना के मुसलमानों ने दिल व जान से उनकी मदद की और फिर मदद भी ऐसी कि भाई बन्दी का हक़ अदा कर दिया।

मदीना वालों ने अपने मुहाजिर भाइयों को अपने घर-बार, तिजारत और ज़मीन वग़ैरह का आधा हिस्सा दे दिया, ताकि वे आसानी से ज़िंदगी गुज़ारने का इन्तिज़ाम कर सकें। इसीलिए मदीना के मुसलमानों को अंसार कहते हैं। अंसार के मानी हैं, मदद करने वाले।

सवालात

1. अंसार किन लोगों को कहते हैं?
2. अंसारी के क्या मानी हैं?

अमली काम

नीचे लिखे हुए पांच सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के नाम

याद कीजिए और किताबें हासिल करके उनके हालात पढ़िए।

1. हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु
2. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु
3. हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु
4. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु
5. हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु

दस जन्नती

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में दस सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हुम वे हैं, जिनको अल्लाह तआला ने दुनिया में यह ख़ुशख़बरी सुना दी थी कि वे जन्नत में जाएंगे। उनके मुबारक नाम ये हैं—

1. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु,
2. हज़रत उतर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु,
3. हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु,
4. हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु,
5. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु,
6. हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु,
7. हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु,
8. हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अन्हु,
9. हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु,
10. हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु,

अमली काम

इन तमाम सहाबा के नाम याद कीजिए और इनके हालात मालूम कीजिए।

अल्लाह वाले

जिन लोगों ने हुज़ुर सल्ल० से मुलाक़ात की, उन्हें सहाबी कहते हैं और जिन्होंने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से मुलाक़ात की, उन्हें ताबई कहते हैं। उनके बाद जो लोग अल्लाह और रसूल के अहकाम पर पूरी तरह अमल करने वाले अब तक हुए या आगे होंगे, उन सबको अल्लाह के वली और बुज़ुर्गाने दीन कहा जाता है।

वली की पहचान यह है कि ख़ुदा और रसूल सल्ल० के अहकाम पर पूरी तरह अमल करता हो, उसकी ज़िंदगी का हर काम इस्लामी अहकाम के मुताबिक़ हो, बुराइयों से बचता हो, कसरत से इबादत करता हो। जिस मुसलमान आदमी में ये ख़ुबियां हों, उसे वली कहते हैं।

कोई वली या बुज़ुर्ग कितनी ही इबादत करता हो, लेकिन उसका दर्जा किसी पग़ैम्बर के किसी सहाबी के बराबर नहीं हो सकता।

सवालात

1. सहाबी किसे कहते हैं?
2. ताबई किसको कहते है।?
3. अल्लाह के वली की क्या पहचान है?

अमली काम

लाइब्रेरी से किताबें हासिल करके नीचे लीखे हुए औलिया अल्लाह के हालात पढ़िए—

1. हज़रत हसन बसरी रह०
2. हज़रत जुनैद बग़दादी रह०
3. हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह०
4. हज़रत राबिआ बसरी रह०
5. हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रह०

ख़ुदा का फ़रमान

1. और अल्लाह तआला ख़ूब पाक रहने वालों के पसन्द करते हैं।

2. अल्लाह तआला अच्छा काम करने वालों को पसन्द करते हैं।

3. और हमने इंसान को अपने मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया है।

4. ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो।

5. ख़ुदा के नज़दीक़ तुम में सबसे ज़्यादा शरीफ़ और भला शख़्श वह है जो सबसे ज़्यादा बुराइयों से बचता हो।

प्यारे नबी सल्ल० की प्यारी बातें

1. सच्चाई नेकी का रास्ता दिखाती है, और नेकी जन्नत की तरफ़ ले जाने वाली है।

2. ख़ुदा की क़सम, वह आदमी मोमिन नहीं हो सकता, जिसके पड़ोसी उसकी शरारतों से बचे हुए न हों।

3. जब खाना खाओ, तो पहले अल्लाह का नाम लो फिर अपने दाहिने हाथ से खाओ।

4. बेहतरीन लोग वे हैं जिनकी उम्र लम्बी हो और उनके अख़्लाक़ अच्छे हों।

5. रास्ते से कांटा-पत्थर हटा देना भी नेकी है।

ISBN 81-7101-481-X

ISBN 81-7101-212-4

ISBN 81-7101-213-2

ISBN 81-7101-385-6

ISBN 81-7101-479-8

ISBN 81-7101-368-6

ISBN 81-7101-555-7

ISBN 81-7101-474-7

ISBN 81-7101-506-9

ISBN 81-7101-535-2

ISBN 81-7101-461-5

ISBN 81-7101-471-2

ISBN 81-7101-437-2

ISBN 81-7101-464-X

ISBN 81-7101-526-3

ISBN 81-7101-516-6

ISBN 81-7101-538-7

ISBN 81-7101-522-0

ISBN 81-7101-532-8

ISBN 81-7101-533-6

ISBN 81-7101-507-7

ISBN 81-7101-508-5

ISBN 81-7101-304-X

ISBN 81-7101-534-4

ISBN 81-7101-366-X

ISBN 81-7101-486-0

ISBN 81-7101-539-5